मार्टिन लूथर किंग, जू. का जन्मदिन

नागरिक अधिकारों के अगुआ मार्टिन लूथर किंग, जूनियर का जन्मदिन विगत 20 वर्षों से राष्ट्रीय अवकाश के रूप में मनाया जा रहा है। यह सभी जातियों के लगभग 60 लाख अमेरिकी लोगों के 15 वर्ष लंबे अभियान का फल है जिन्होंने याचिकाओं पर हस्ताक्षर करके अमेरिकी कांग्रेस से किंग का जन्मदिन मनाने के लिए इसे अवकाश घोषित करने का कानून बनाने का अनुरोध किया। यह अवकाश हर साल जनवरी के तीसरे सोमवार को मनाया जाता है।

इस अवकाश के लिए किंग की हत्या के बाद 1968 में प्रतिनिधि सभा में आवाज उठाई गई। कांग्रेस के दोनों सदनों में 19 अक्टूबर 1983 को यह विधेयक बहुमत से पास हो गया। राष्ट्रपति रीगन ने इस कानून पर 2 नवंबर 1983 को हस्ताक्षर किए। इसे पहली बार 20 जनवरी 1986 को लागू किया गया और संघीय कार्यालय बंद रहे। वर्ष 2000 से सभी 50 राज्यों ने इस अवकाश को मान्यता दे दी है। इस दिन अधिकांश स्कूल, बैंक और अनेक बड़े व्यापारिक संस्थान बंद रहते हैं।

अवकाश के बाद आने वाले हफ़्तों में स्कूल तथा अन्य संस्थाएं ऐसी शैक्षिक सामग्री बांटती हैं जिनमें किंग के समान अवसर और अहिंसा संबंधी विचार दिए रहते हैं। अवकाश के आसपास के दिनों में चर्च सेवाएं, भजन संगीत, निबंध प्रतियोगिताएं, जागरूकता अभियान और किंग के भाषणों का पुनर्प्रसारण आदि गतिविधियां आयोजित की जाती हैं।

किंग का जन्म 15 जनवरी 1929 को हुआ था। वह 1950 के दशक के मध्य में चर्चा में आए जब मोंटगोमरी के एक बपतिस्मी उपदेशक के रूप में उन्होंने सार्वजनिक ट्रांसपोर्ट प्रणाली के 382 दिन के बहिष्कार का नेतृत्व किया। उन्होंने उस कानून को खत्म करने की लड़ाई लड़ी जिसके तहत अफ्रीकी अमेरिकी नागरिकों को बसों में पीछे बैठना पड़ता था और सीट खाली होने पर भी श्वेत लोगों के लिए निर्धारित अगले भाग में खड़े रहना पड़ता था। इस बहिष्कार और अन्य विरोधों के कारण सुप्रीम कोर्ट ने अलाबामा राज्य के अलगाववादी कानूनों को असंवैधानिक घोषित कर दिया। किंग ने 'सदर्न क्रिश्चियन लीडरशिप कांफ्रेंस' की स्थापना की जिसने दक्षिणी राज्यों में मतदान, शिक्षा, आवास तथा सार्वजनिक सुविधाओं के लिए समान अधिकारों के अन्य अभियान चलाए। किंग इस बात पर सदा जोर देते रहे कि नागरिक अधिकारों के समर्थक अहिंसक तरीके अपनाएं और जेलों में ठूंसे जाने और मारे जाने के बावजूद पलटवार नहीं करें। इस योगदान के लिए उन्हें 1964 में नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। –**एल.के.एल.**

रिचर्ड शीनवाल्ड © ए. पी.–डब्ल्यू. डब्ल्यू. पी.

मार्टिन लूथर किंग, जू. दिवस के मौके पर फ़ोक्स थियेटर में आयोजित कार्यक्रम में डेट्रोइट के ग्रेटर ग्रेस टेंपल के गायक-गायिका कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए।

© ए. पी.–डब्ल्यू. डब्ल्यू. पी.

मार्च 1965 में समान मतदान अधिकार की मांग को लेकर सेल्मा से मोंटगोमरी, अलाबामा तक के 80 किलोमीटर के पांच दिन के सफ़र के दौरान अलाबामा नदी के पार जाते हुए प्रदर्शनकारी।